क्यों ? क्या यह आयत पैग़म्बर (स0) के मासूम होने से मुआफ़िक़त रखती है?

आयतुल्लाह नासिर मकारिम शीराज़ी
आयतुल्लाह जाफ़र सुबहानी

सवाल : अगर पैग़म्बरे इस्लाम (स0) और दूसरे पैग़म्बर (अ0) गुनाहों से पाक हैं तो फ़िर इस आयत में पैग़म्बर के गुनाह बख़्शने से क्या मुराद है?

इन्ना फ़तह्ना लक फत्हम्मुबीना ☐ लियग़फिर लकल्लाहु मा तक़द्दम मिन ज़म्बिका वमा तअख़्खर व युतिम्म निअ्मतहू अलैइका वयह्दियक सिरातम्मुस्तक़ीमा ☐

''हम तुम्हारे लिये नुमाया फ़तह (फ़त्हे मक्का) वुजूद में लाए ताकि खुदा तुम्हारे पिछले और आइन्दा गुनाह बख़्श दे और अपनी नेअमत को तुम्हारे हक़ में कामिल कर दे और तुम्हें राह–रास्त की जानिब हिदायत कर दे।'' (सूरए फतह आयत–1,2)

जवाबः पहले तो यह बात ज़हन नशीन रखनी चाहिए कि तहरीकों के बानी और इन्क़िलाबी अश्ख़ास जो आम ख़यालात के धारे के ख़िलाफ़ क़दम उठाते हैं और चाहते हैं कि अपने तरक़्क़ी पसन्दाना प्रोग्राम के ज़रिये रू बइन्हितात और आलूदा मुआशरे की इस्लाह करें वह पहले क़दम पर ही मुख़ालिफ़तों, इल्ज़ाम तराशियों, नारवा निस्बतों और बेबुनियाद तोहमतों से दोचार होते हैं। तोहमत लगाना उन हरबों में से एक है जो पसमान्दह मुआशरों में इस्तेअ्माल किये जाते हैं और इसका मक़सद यह होता है कि अपने मुसलिह अफ़राद और शख़सियतों को फ़िक्र की कोताही और अपनी कम ज़र्फ़ी की बिना पर तोहमतों और नारवा निस्बातों के ज़हर आलूद तीरों का निशाना बनाया जाए।

पैग़म्बरे इस्लाम (स0) भी इस क़ाएदे से मुस्तस्ना न थे। आप को भी क़ुरैश की मुख़ालिफत और बेबुनियाद तोहमतों का सामना करना पड़ा। जिस शख़्स को कल तक क़ुरैश की सादिक़, अमीन और परहेज़गार हस्ती माना जाता था उसने जिस दिन उनके पस्त ख़यालात की मुख़ालिफ़त की और लोगों को खुदा परस्ती की दावत दी उसी दिन से उस पर जादूगरी, कुहानत, जुनून और खुदा पर झूठे इल्ज़ाम बाँधने की तोहमतें लगायी जाने लगीं, अल्लाह तआला ने इन तोहमतों को कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से नक़ल किया है। यह एक मुसल्लमा अम्र है कि अगर ऐसी तोहमतों का कुछ लोगों पर असर न भी हो तब भी यह कुछ सादह लौह और कम फ़हम लोगों के लिये पैग़म्बर की रास्तगोई (सच्चाई) और दावे के बारे में शक व शुब्हे की बाइस बनती हैं और इसमें कोई कलाम नहीं कि लोगों का एक गिरोह एक मुद्दत तक इन तोहमतों के बारे में शक व तरद्दुद और दोराई का शिकार रहता है।

इन हालात में क्योंकर मुमकिन है कि इन तोहमतों का इज़ाला किया जाए ताकि हक़ीक़त का चेहरा इन औहाम के गोरख धंधे के दरमियान में से बेनक़ाब हो जाए?

इसका एक ही मोअस्सर तरीक़ा है और वह यह कि एक उलुल अज़्म और तरक़्क़ी पसन्द शख़्स जो इज्तेमाई तरज़े फ़िक्र और नस्बुलऐन का अलमबरदार हो अगर वह कामियाब हो जाए और अपना मक़सद हासिल कर ले और लोग खुद अपनी आँखों से इसकी

तहरीक के फ़वाएद देख लें तो तमाम तोहमतें और इल्ज़ाम तराशियाँ नक़्श बर आब हो जाती है और इन तोहमतों की जगह कई अच्छे अल्क़ाब ले लेते हैं जो अज़मत, क़ुदरत और मानवियत का मज़हर होते है और अगर सूरते हाल इसके बरअक्स हो तो अक्सर यह तोहमतें बाज़ लोगों के ज़हनों में मुद्दत तक बाक़ी रहती हैं और कई अशख़ास के बारे में कारगर और मोअस्सर साबित होती हैं।

बिलकुल यही बात पैग़म्बरे इस्लाम (स0) के बारे में भी कही जा सकती है। आप ने एक तरक़्क़ी पसन्दाना प्रोग्राम और कई ऐसे ताबनाक क़वानीन के साथ मुक़ाबले के मैदान में क़दम रखा जो अवाम के लिये तो मनफ़अत बख़्श थे लेकिन हुकूमत के ख़िलाफ़ जाते थे। आप इस मैदान में अपनी आइन्दा कामियाबियों की ख़बर देते थे और अल्लाह तआला की इनायात की रोशनी में और अपनी और अपने वफ़ादार साथियों की मुस्तक़िल मिज़ाजी और साबित क़दमी की बदौलत आप ने तमाम मुश्किलात पर क़ाबू पा लिया। आख़िरकार नौबत यहाँ तक पहुँची कि शिर्क का गढ़ और उन इल्ज़ाम तराशियों की पैदाईश का मरकज़ मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गया और मक्का एक खुली हुई कामियाबी के तौर पर फतह हो गया।

यह कामियाबी जो इस अम्र का सबब बनी कि क़ुरैश अपनी तमाम क़ुव्वत के साथ इस्लाम के ज़ेरे हुकूमत और उसके क़ब्ज़े में आ जाएँ, अपने दामन में एक इससे भी बड़ा नतीजा रखती थी और वह यह कि जब यह मर्दे जरी इस मैदान में सुर खुरु हुआ और लोगों ने इसकी जद्दो जेहद का बेहतरीन नतीजा वाज़ेह तौर पर देख लिया और उसने अपने मानवी इन्क़िलाब को पाए तकमील तक पहुँचा दिया तो इस कामियाबी की रोशनी में दरोग गोओं और झूठी तोहमतें लगाने वालों के मुँह बन्द हो गए इस अज़ीम कामियाबी की मौजूदगी में वह उसे मजनून और दीवाना या साहिर और काहिन नही कह सकते थे क्योंकि वह शख़्स जिसमें इस क़िस्म के रूहानी और नफ़्सियाती नक़ाएस मौजूद हों ऐसा इन्क़िलाब बरपा नहीं कर सकता।

लिहाज़ा मज़कूरा बाला आयत में ''ज़म्ब'' से मुराद ही नाजाएज़ तोहमतें हैं जो फ़त्हे मक्का से पहले तक क़ुरैश के सादह लौह अफराद के दिलों में मौजूद थीं और इस कामियाबी ने उन तमाम ना रवा निस्बतों को बातिल कर दिया और दुनिया के इस अज़ीम नजात दहेन्दा के मुक़द्दस दामन से यह इल्ज़ाम दूर हो गए। ज़ाहिर है कि अगर वही सूरते हाल बाक़ी रहती जो फ़त्हे मक्का से पहले थी और रसूले अकरम (स0) के मुक़ाबले के मैदान में कामियाबी हासिल न कर पाते तो तोहमतें भी अपनी जगह क़ाएम रहतीं।

इस तफ़्सीर की गवाही दो चाज़ें देती हैः–

1– सरीह तौर पर आयत यह कहती है कि हम फ़त्हे मक्का वजूद में लाए ताकि इसकी रौशनी में तुम्हारे गुनाह बख़्श दिये जाएँ।

अगर गुनाहों की बख़्शिश से मुराद तोहमतों और नाजाएज़ इल्ज़ाम तराशियों का बातिल करना ही हो जैसा कि हम ने ऊपर तफसील से बयान किया है तो फिर इन दो चीज़ों यानि ''फ़त्हे मक्का'' और ''गुनाहों की बख़्शिश'' का इरतेबात सही और वाज़ेह हो जाता है क्योंकि इस कामियाबी ने तोहमतों की तकरार के बारे में लोगों के मुँह बन्द कर दिये और फिर किसी के हज़रत (स0) को इल्ज़ाम देने का सवाल बाक़ी न रहा और अगर इन से मुराद शरअी गुनाह और नाफरमानियाँ हों तो फिर इन गुनाहों की बख़्शिश का ज़रिया एक अस्करी फ़त्ह और ज़ाहिरी कामियाबी नहीं बल्कि इस्तेग़फ़ार और तौबा है।

2– आयत का वाज़ेह मफ़हूम यह है कि यह फ़त्ह और कामियाबी गुज़श्ता और आइन्दा गुनाहों की बख़्शिश के अस्बाब वजूद में लाई और यह जुम्ला उसी सूरत में सही मानों का हामिल हो सकता है जब इससे मुराद तोहमतें और ना रवा निस्बतें ही हों यानि यह अज़ीम इज्तेमाअी कामियाबी इस अम्र का मूजिब बनी कि साबिक़ा तोहमतें ज़ाएल हो जाएँ और आइन्दा भी कोई ऐसी तोहमतें न लगाए लेकिन अगर इससे मुराद शरअी गुनाह ही हों तो फिर आइन्दा गुनाहों की बख़्शिश का सही मफहूम ज़ाहिर नही होता।